



अनतरद्वन्द ... दलि को छू लेने वाली कहानी

कहानियाँ तो बहुत पढ़ी हैं और सुनी भी बहुत हैं। कुछ सच्ची होती हैं तो कुछ काल्पनिक होती हैं। कुछ बन जाती हैं तो कुछ बुनी हुयी होती हैं। कहानियाँ राजा और रानी की हो तो बहुत पसंद की जाती हैं। बचपन में सुना करते थे कएक राजा था एक रानी थी दोनों मलि और खत्म कहानी।

एक कहानी जो बनी नहीं बल्कि बुनी हुयी है शब्दों के ताने बाने से लेकिन इस कहानी में राजा भी है और रानी भी। इस कहानी में राजा - रानी मलि तो गए लेकिन अंत में मलिंगे नहीं। क्यूंकहिमारा जो राजा है वो कसिी और रानी का है तो हमारी रानी भी कसिी और राजा की ही रानी है ...!

तो फरि क्या हुआ खत्म कहानी ...!

नहीं ऐसा तो नहीं लगता क कहानी खत्म हो गयी ...जब शुरू की है तो खत्म कैसे की जाये ...मगर कहानी बुनी है तो कुछ तो बुनना ही पड़ेगा

तो शुरुआत रात के समय से होती है। कहानी की नायिका यानी हमारी रानी यानी वेदिका ...! की आज चूड़ियाँ और पायल कुछ ज्यादा ही खनक -छमक रहे हैं। कलाई भर चूड़ियाँ और बजती पायल परिवार की रीत है और फरि उसके पयिा जी को भी खनकती चूड़ियाँ ही पसंद है और पायल भी।

मगर आज ये पायल - चूड़ियाँ पयिा के लएि तो नहीं खनक रही , बस आज बहुत खुश है वेदिका ...! दौड़ कर सीढियाँ चढ़ रही है। छत पर पूनम का चाँद खलि रहा है।उसे छत पर से चाँद देखना नहीं पसंद।उसे तो अपनी खड़िकी से ही चाँद देखना पसंद है , उसे लगता है क खड़िकी वाला चाँद ही उसका है , छत वाला चाँद तो सारी दुनिया का है।

कमरे में जाते ही देखा राघव तो सो गए हैं। थोडा मायूस हुई वेदिका , उसे इस बात से सख्त चढि थी के जब वह कमरे में आये और राघव सोया हुआ मलि। उसे रात का ही तो समय मलिता था राघव से बतयिाने का , दनि भर तो दोनों ही अपने-अपने काम , जमिमेदारयिों में व्यस्त रहते हैं। लेकिन वह तो सो गया था।अक्सर ही ऐसा होता है।

थोडी दूर रखी कुर्सी पर वह बैठ खड़िकी में से झांकता चाँद नहिरती रही। फरि सोये राघव को नहिरती सोच रही थी क कितना भोला सा मासूम सा लग रहा है , एकदम प्यारे से बच्चे जैसा नशिछल सा , और है भी वैसा ही नशिछल ...वेदिका का मन कयिा झुक कर राघव का माथा चूम ले , हाथ भी बढ़ाया लेकिन रुक गयी।

संयुक्त परिवार में वेदिका सबसे बड़ी बहू है।राघव के दो छोटे भाई और भी है। सभी अपने परिवारों सहति साथ ही रहते हैं। राघव के माँ-बाबा भी अभी ज्यादा बुजुर्ग नहीं हैं।

बहुत बडा घर है ,जसिमे से तीसरी मंजलि पर कमरा वेदिका का है। साथ ही में एक छोटी सी रसोई है। रात को या सुबह जल्दी चाय-काँफी बनानी हो तो नीचे नहीं जाना पड़ता। बड़ी बहू है तो काम तो नहीं है पर जमिमेदारी तो है ही। पछिले बाईस बरसों से उसकी आदत है कसिभी बच्चों को एक नज़र देख कर संभाल कर , हर एक के कमरे में झांकती कसिी को बतयिाती तो कसिी बच्चे की कोई समस्या हल करती हुई ही अपने कमरे में जाती है। वह केवल अपने बच्चों का ही खयाल नहीं रखती बल्कसिभी बच्चों का खयाल रखती है। ऐसा आज भी हुआ और आदत के मुताबकि राघव सोया हुआ मलि।

राघव की आदत है बहुत जल्द नींद के आगोश में गुम हो जाना।वेदिका ऐसा नहीं कर पाती वह रात को बसितर पर लेट कर सारे दनि का लेखा -जोखा करके ही सो पाती है।

लेकनि आज वेदिका का मन कही और ही उडान भर रहा था।वह धीरे से उठकर खड़िकी के पास आ गयी। बाहर अभी शहर भी नहीं सोया था। लाइटें कुछ ज्यादा ही चमक रही थी। कुछ तो शादयिों ही बहुत थी इन दनिों , थोडा कोलाहल भी था तेज़ संगीत का , शायद नाच-गाना चल रहा है ।

उसकी नज़र चाँद पर टकि गयी और खुशी थोडी और बढ़ गयी जो किराघव को सोये हुए देख कर कम हो गयी थी।उसे चाँद में प्रभाकर का चेहरा नज़र आने लगा था सहसा। खड़िकी वाला चाँद तो उसे सदा ही अपना लगा था लेकिन इतना अपनापन भी देगा उसने सोचा ना था।

तभी अचानक एक तेज़ संगीत की लहरी कानों में टकराई। एक बार वह खड़िकी बंद करने को हुई मगर गीत की पंक्तयिाँ सुन कर मुसकुराये बगैर नहीं रह सकी। आज-कल उसे ऐसा क्यूँ लगने लगा है क हिर गीत ,हर बात बस उसी पर लागू हो रही है। वह गीत सुन रही थी और उसका भी गाने को मन हो गया ..., जमाना कहे लत ये गलत लग गयी , मुझे तो तेरी लत लग गयी ...!

अब वेदिका को ग्लानितो होनी चाहएि , कहाँ भजन सुनने वाली उम्र में ये भोंडे गीत सुन कर मुसकुरा रही है।लेकनि उसका मन तो आज-कल एक ही नाम गुनगुनाता है , प्रभाकर यही प्रभाकर हमारी कहानी का राजा है ...!



वेदिका इतनी व्यस्त रहती है और घर से कम ही निकलती है , कहीं जाना हो तो पूरा परिवार साथ ही होता है लगभग तो प्रभाकर से कैसे मेली...! अब यह प्रभाकर कौन है ...?

तो क्या वह उसका कोई पुराना ...?

अजी नहीं ...! आज कल एक चोर दरवाजा घर में ही घुस आया है। कम्प्यूटर -इंटरनेट के माध्यम से ...! नयी -नयी टेक्नोलोजी सीखने का बहुत शौक है वेदिका को इंटरनेट पर बहुत कुछ जानकारी लेती रहती है। बच्चों के पास बैठना बहुत भाता है उसे तो उनसे ही कम्प्यूटर चलाना सीख लिया । ऐसे ही एक दिन फेसबुक पर भी आ गयी।

फेसबुक की दुनिया भी क्या दुनिया है ...अलग ही रंग -रूपएक बार घुस जाओ तो बस परीलोक का ही आभास देता है। ऐसा ही कुछ वेदिका को भी महसूस हुआ।

ना जाने कब वह प्रभाकर को मतिर से मीत समझने लगी। और आज खुश भी इसीलिए है कि..., खट -खट आईने के आगे रखा मोबाईल खटखटा उठा था। वेदिका ने उठाया तो प्रभाकर का सन्देश था। शुभरात्रि कहने के साथ ही बहुत सुंदर मनभाता कोई शेर लिखा था। देख कर उसकी आखों की चमक बढ़ गयी। तो यही था आज वेदिका की खुशी का राज ...पछिले एक साल से प्रभाकर से चेटिंग से बात हो रही थी आज उसने फोन पर भी बात कर ली। और अब यह सन्देश भी आ गया।

नाईट -सूट पहन अपने बसितर पर आ बैठी वेदिका , राघव को नहिरने लगी और सोचने लगी कियह जो कुछ भी उसके अंतर्मन में चल रहा है क्या वह ठीक है। यह प्रेम-प्यार का चक्कर ...! क्या है यह सब ...? वह भी इस उम्र में जब बच्चों के भवषिय के बारे में सोचने की उम्र है। तो क्या यह सब गलत नहीं है ? और राघव से क्या गलती हुई ...! वह तो हर बात का खयाल रखता है उसका। कभी कोई चीज़ की कमी नहीं होने दी। अब उसे काम ही इतना है की वह घर और उसकी तरफ ध्यान कम दे पाता है तो इसका मतलब यह थोड़ी है की वेदिका कहीं और मन लगा ले। अब वेदिका का मन थोड़ा बैचैन होने लगा था।

वेदिका थोड़ी बैचैन और हैरान हो कर सोच रही थी। इतने उसूलों वाले वचिर उसके ,इतनी व्यस्त जनिदगी में जहाँ हवा भी सोच -समझ कर प्रवेश करती है वहां प्रभाकर को आने की इजाजत कहाँ से मलि गयी। यह दलि में सेंधमारी कैसे हो गयी उसकी।

सहसा एक बजिली की तरह एक खयाल दौड़ पड़ा , अरे हाँ , दलि में सेंध मारी तो हो सकती है क्यूँ की विवाह के बाद , जब पहली बार राघव के साथ बाईक पर बाज़ार गयी थी और सुनसान रास्ते में उसने जरा रोमांटिकि जोते हुए राघव की कमर में हाथ डाला था और कैसे वह बीचराह में उखड़ कर बोल पड़ा था कियह कोई सभ्य घरों की बहुओं के लक्षण नहीं है , हाथ पीछे की ओर झटक दिया था। बस उसे वक्त उसके दलि का जो तकौने वाला हसिसा होता है , तड़िक गया ...और वेदिका उसी रस्ते से रसिने लगी थोड़ा - थोड़ा , हर रोज़

हालाँकि बाद में राघव ने मनाया भी उसे लेकिन दलि जो तड़िका उसे फरि कोई भी जोड़ने वाला सोल्युशन बना ही नहीं। वह बेड -रूम के प्यार को प्यार नहीं मानती जो बाते सरिफ शरीर को छुए लेकिन मन को नहीं वह प्यार नहीं है।

सोचते-सोचते मन भर आया वेदिका का और सरिहाने पर सर रख सीधी लेट गयी और दोनों हाथ गर्दन के नीचे रख कर सोचने लगी।

पर वेदिका तू बहुत भावुक है और यह जीवन भावुकता से नहीं चलता ...! यह प्रेम-प्यार सरिफ कतिबों में ही अचछा लगता है ,हकीकत की पथरीली जमीन पर आकर यह टूट जाता है ...और फरि राघव बदल तो गया है न , जैसे तुम चाहती हो वैसा बनता तो जा ही रहा है ...! वेदिका के भीतर से एक वेदिका चमक सी पड़ी।

हाँ तो क्या हुआ ...! का वर्षा जब कृषिसिखानेमरे , रसिते मन पर कतिनी भी फुआर डालो जीवति कहाँ हो पायेगा ...! वेदिका भी तमक गयी।

करवट के बल लेट कर कोहनी पर चेहरा टकि कर राघव को नहिरने लगी और धीरे से उसके हाथ को छूना चाहा लेकिन ऐसा कर नहीं पायी और धीरे से सरका कर उसके हाथ के पास ही हाथ रख दिया। हाथ सरकने -रखने के सलिसलि में राघव के हाथ को धीरे से छू गया वेदिका का हाथ। राघव ने झट से उसका हाथ पकड लिया। लेकिन वेदिका ने खींच लिया अपना हाथ , राघव चौक कर बोल पड़ा ,क्या हुआ ...!

कुछ नहीं आप सो जाइये ... वेदिका ने धीरे से कहा और करवट बदल ली।

सोचने लगी , कतिना बदल गया राघव ...! याद करते हुए उसकी आँखे भर आयी उस रात की जब उसने पास लेट कर सोये हुए राघव के गले में बाहें डाल दी थी और कैसे वह वेदिका पर भड़क उठा था , हडबडा कर उठा बैठा था ...! अब वेदिका को कहाँ मालूम था किराघव को नींद में डसिटर्ब करना पसंद नहीं ...! उस रात उसके तड़िके हुए दलि का कोना थोड़ा और तड़िक गया , वह भी टेढ़ा हो कर ...सारी रात दलि के रास्ते से वेदिका रसिती रही।

तो क्या हुआ वेदिका ...! हर इन्सान का अपना व्यक्तित्व होता है , सोच होती है। अब तुम्हारा पति है तो



क्या हुआ , वह अपनी अलग शख्सियत तो रख सकता है। तुम्हारा कतिना खयाल भी तो रखता है। हो सकता है उसे भी तुमसे कुछ शकियतें हो और तुम्हें कह नहीं पाता हो और फरि अरेंज मेरेज में ऐसा ही होता है पहले तन और फरि एक दनि मन मलि ही जाते है। थोडा व्यवहारकि बनो , भावुक मत बनो ...! अंदर वाली वेदकि फरि से चमक पड़ी।

हाँ भई , रखता है खयाल ...लेकनि कैसे ...! मैंने ही तो बार-बार हथोडा मार -मार के यह मूरत गढ़ी है लेकनि ये मूरत ही है इसमें पुराण कहाँ डले है अभी ...! मुस्कुराना चाहा वेदकि ने।

वेदकि को बहुत हैरानी होती जो इन्सान दनि के उजाले में इतना गंभीर रहता हो ,ना जाने कसि बात पर नाराज़ हो जायेगा या मुहं बना देगा ,वही रात को बंद कमरे में इतना प्यार करने वाला उसका खयाल रखने वाला कैसे हो सकता है।

अंदर वाली वेदकि आज वेदकि को सोने नहीं दे रही थी फरि से चमक उठी , चाहे जो हो वेदकि , अब तुम उम्र के उस पड़ाव पर हो जहाँ तुम यह रसिक नहीं ले सकती कि जो होगा देखा जायेगा और ना ही सामाजिक परस्थितियाँ ही तुम्हारे साथ है , इसलिए यह पर-पुरुष का चक्कर ठीक नहीं है।

पर -पुरुष ...! कौन पर-पुरुष क्या प्रभाकर के लिए कह रही हो यह ...लेकनि मैंने तो सिर्फ प्रेम ही किया है और जब स्त्री किसी को प्रेम करती है तो बस प्रेम ही करती है कोई वजह नहीं होती। उम्र में कतिना बड़ा है ,कैसा दखिता है , बस एक अहसास की तरह है उसने मेरे मन को छुआ है ...! वेदकि जैसे कहीं गुम सी हुई जा रही थी। प्रभाकर का खयाल आते ही दिल में जैसे प्रेम संचारित हो गया हो और होठों पर मुस्कान आ गयी।

हाँ ...! मुझे प्यार है प्रभाकर से , बस है और मैं कुछ नहीं जानना चाहती ,समझना चाहती ..., तुम चुप हो जाओ ..., वेदकि थोडा हठी होती जा रही थी।

बेवकूफ मत बनो वेदकि ...! जो व्यक्ति अपनी पत्नी के प्रति विफादार नहीं है वो तुम्हारे प्रति कैसे वफादार हो सकता है , जो इन्सान अपने जीवन साथी के साथ इतने बरस साथ रह कर उसके प्रेम -समर्पण को झुठला सकता है और कहता है की उसे अपने साथी से प्रेम नहीं है वो तुम्हें क्या प्रेम करेगा। कभी उसका प्रेम आजमा कर तो देखना ,कैसे अजनबी बन जायेगा , कैसे उसे अपने परिवार की याद आ जाएगी ...! वेदकि के भीतर जैसे जोर से बजिली चमक पड़ी। और वह एक झटके से उठ कर बैठ गयी।

हाँ यह भी सच है ...! लेकनि ...! मैं भी तो कहाँ वफादार हूँ राघव के प्रति ...! फरि मुझे यह सोचना कहा शोभा देता है कि प्रभाकर ...! वेदकि फरि से बैचन हो उठी।

बसिर से खड़ी हो गयी और खड़की के पास आ खड़ी हुई। बाहर कोलाहल कम हो गया लेकनि अंदर का अभी जाग रहा है। आज नींद जाने कैसे कहाँ गुम हो गई ...क्या पहली बार प्रभाकर से बात करने की खुशी है या एक अपराध बोध जो उसे अंदर ही अंदर कचोट रहा था।

सोच रही थी क्या अब प्रभाकर का मलिना सही है या कस्मिमत का खेल कयिह तो होना ही था। अगर होना था तो पहले क्यूँ ना मलि वे दोनों।

राघव के साथ रहते -रहते उसे उससे एक दनि प्रेम हो ही गया या समझोता है ये या जगह से लगाव या नयित कि अब इस खूँटे से बन्ध गए हैं तो बन्ध ही गए बस।

नींद नहीं आ रही थी तो रसोई की तरफ बढ़ गई। अनजाने में चाय की जगह कॉफी बना ली। बाहर छत पर पड़ी कुर्सी पर बैठ कर जब एक सपि लिया तो चौक पड़ी यह क्या ...! उसे तो कॉफी की महक से भी परहेज़ था और आज कॉफी पी रही है ...? तो क्या वेदकि बदल गयी ...! अपने उसूलों से डिगी गयी ?जो कभी नहीं किया वह आज कैसे हो रहा है ...!

राघव की नशिखलता वेदकि को अंदर ही अंदर कचोट रही थी कि वह गलत जा रही है ,जब उसे वेदकि की इस हरकत का पता चलेगा क्या वह सहन कर पायेगा या बाकी सब लोग उसे माफ़ करेंगे उसे ?

अचानक उसे लगने लगा कि वह कटघरे में खड़ी है और सभी घर के लोग उसे घूरे जा रहे हैं नफरत-घृणा और सवालिया नज़रों से ..., घबरा कर खड़ी हो गई वेदकि ...

वेदकि जतिना सोचती उतना ही घिरती जा रही है ...रात तो बीत जाएगी लेकनि वेदकि की उलझन खत्म नहीं होगी। क्यूँकयिह उसकी खुद की पाली हुई उलझन है ...

तो फरि क्या करे वेदकि ...? यह हम क्या कहें ...! उसकी अपनी जन्मिदगी है चाहे बर्बाद करे या

रात के तीन बजने को आ रहे थे। वेदकि घड़ी की और देख सोने का प्रयास करने लगी। नींद तो उसके आस - ही नहीं थी।

यह जो मन है बहुत बड़ा छलिया है। एक बार फरि से उसका मन डोल गया और प्रभाकर का खयाल आ गया। सोचने लगी क्या वह भी सो गया होगा क्या ...? वह जो उसके खयालों में गुम हुयी जाग रही तो क्या



वह भी ...!

खट-खट फोन खटखटा उठा, देखा तो प्रभाकर का ही सन्देश था। फिर क्या वह बात सही है कमिन से मन को राह होती है। हाँ ...! शायद, जब रानी जाग रही हो तो राजा भी जागेगा ही ...

अब इस कहानी का क्या किया जाए क्योंकि वेदिका का अन्तर्द्वन्द्व खत्म तो हुआ नहीं।

उसका प्रभाकर के प्रति कोई शारीरिक आकर्षण वाला प्रेम नहीं है बल्कि प्रभाकर से बात करके उसको एक सुरक्षा का अहसास देता है। वह उसकी सारी बात ध्यान से सुनता है और सलाह भी देता है, उसकी बातों में भी कोई लाग-लपेट नहीं देखती उसे, फिर क्या करे वेदिका? यह तो एक सच्चा मित्र ही हुआ और एक सच्चे मित्र से प्रेम भी तो हो सकता है।

लेकिन ऐसे फोन करना या मैसेज का आदान-प्रदान भी तो ठीक नहीं ...! सोचते-सोचते वेदिका मुस्कुरा पड़ी शायद उसे कोई हल मिल गया हो।

वह सोच रही है कि फेसबुक के रिश्ते फेसबुक तक ही समिति रहे तो बेहतर है। अब वह प्रभाकर से सिर्फ फेसबुक पर ही बात करेगी वह भी समिति मात्रा में ही। नया जमाना है पुरुष मित्र बनाना कोई बुराई नहीं है लेकिन यह मीत बनाने का चक्कर भी उसे ठीक नहीं लग रहा था। वह प्रभाकर को खोना नहीं चाहती थी। उसने तय कर लिया कि अब वह फोन पर बात या मैसेज नहीं करेगी और सोने की कोशिश करने लगी। अब रानी समझ गयी है तो राजा को समझना ही पड़ेगा कि असल दुनिया और आभासी दुनिया में फर्क तो होता ही है।

~ उपासना सयिंग ~